पाठ–14

शहीद बकरी

हरे–भरे पहाड़ पर बकरियाँ चरने जातीं तो दूसरे–तीसरे रोज एक न एक बकरी कम हो जाती। भेड़िये की इस धूर्तता से तंग आकर चरवाहे ने वहाँ बकरियाँ चराना बंद कर दिया और बकरियों ने भी मौत से बचने के लिए बाड़े में कैद रहकर जुगाली करते रहना ही श्रेष्ठ समझा।

लेकिन न जाने क्यों एक युवा नई बकरी को यह बंधन पसंद नहीं आया। अत्याचारी से यों कब तक प्राणों की रक्षा की जा सकेगी ? वह पहाड़ से उतर कर किसी रोज बाड़े में भी कूद सकता है। शिकारी के भय से मूर्ख शुतुरमुर्ग रेत में गरदन छुपा लेता है तब क्या शिकारी उसे बख्श देता है ? इन्हीं विचारों से ओत–प्रोत वह हसरत भरी नज़रों से पर्वत की ओर देखती रहती। साथियों ने उसे आँखों–आँखों में समझाने का प्रयत्न किया कि वह ऐसे मूर्खतापूर्ण विचारों को मन में न लाए। भोग्य सदैव से भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं। भेड़िये के मुँह हमारा खून लग चुका है, वह अपनी आदत से कभी बाज नहीं आएगा। लेकिन नई युवा बकरी तो भेड़िये के मुँह में लगे खून को ही देखना चाहती थी। वह किस तरह झपटता है, यह करतब देखने की उसकी लालसा बलवती होती गई।

आखिर एक रोज मौका पाकर बाड़े से वह निकल भागी और पर्वत पर चढ़कर स्वच्छंद विचरती, कूदती, फलाँगती दिन भर पहाड़ पर चरती रही। मनमानी कुलेलें करती रही। भेड़िये को देखने की उत्सुकता भी बनी रही, परंतु उसके दर्शन न हुए। झुटपुटा होने पर लाचार जब वह नीचे उतरने को बाध्य हुई तो रास्ते में दबे पाँव भेड़िया आता हुआ दिखाई दिया। उसकी रक्तरंजित आँखें, लपलपाती जीभ और आक्रमक चाल से वह सब कुछ समझ गई। भेड़िया मुसकुराकर बोला, ''तुम बहुत सुंदर हो, प्यारी मालूम होती हो। मुझे तुम्हारी जैसी साथिन की आवश्यकता थी, मैं कई रोज से अकेलापन महसूस कर रहा था। आओ, तनिक

साथ–साथ पर्वतराज की सैर करें।''

बकरी को भेड़िये की बकवास सुनने का अवसर न था। उसने तनिक पीछे हटकर इतने जोर से टक्कर मारी कि असावधान भेड़िया सँभल न सका। यदि बीच का भारी पत्थर उसे सहारा न देता तो औंधे मुँह गिर गया होता।

भेड़िये की जिंदगी में यह पहला अवसर था। वह किंकर्तव्यविमूढ़–सा हो गया। टक्कर खाकर अभी वह सँभल भी न पाया था कि बकरी के पैने सींग उसके सीने में इतने जोर से लगे कि वह चीख उठा। क्षतविक्षत सीने से लहू की बहती धार देख भेड़िये के पाँव उखड़ गए। मगर एक निरीह बकरी के आगे भाग खड़ा होना उसे कुछ जँचा नहीं। वह भी साहस बटोरकर पूरे वेग से झपटा। बकरी तो पहले से ही सावधान थी, वह कतराकर एक ओर हट गई और भेड़िये का सिर दरख्त से टकराकर लहूलुहान हो गया।

लहू को देखकर अब उसके लहू में भी उबाल आ गया। वह जी–जान से बकरी के ऊपर टूट पड़ा। अकेली बकरी उसका कब तक मुकाबला करती? वह उसके दाँव–पेच देखने की लालसा और अपने अरमान पूरे कर चुकी थी। साथियों की अकर्मण्यता पर तरस खाती हुई बेचारी ढेर हो गई।

पेड़ पर बैठे हुए तोते ने मुसकुराकर मैना से पूछा, ''भेड़िये से भिड़कर भला बकरी को क्या मिला?''

मैना ने सगर्व उत्तर दिया, ''वही जो अत्याचारी का सामना करने पर पीड़ितों को मिलता है। बकरी मर जरूर गई, परंतु भेड़िये को घायल करके मरी है। वह भी अब दूसरों पर अत्याचार करने के लिए जीवित नहीं रह सकेगा। सीने और मस्तक के घाव उसे सड़–सड़कर मरने को बाध्य करेंगे। काश! बकरी के अन्य साथियों ने उसकी भावनाओं को समझा होता। छिपने के बजाय एक साथ वार किया होता तो, वे आज बाड़े में कैदी जीवन व्यतीत करने के बजाय पहाड़ पर निःशंक और स्वच्छंद विचरती होतीं!''

तोता अपना–सा मुँह लिए चुपचाप शहीद बकरी की ओर देखने लगा।

अयोध्याप्रसाद गोयलीय

शब्दार्थ

जुगाली	–	पशुओं द्वारा खाए हुए भोजन को पुनः चबाना			
अत्याचारी	–	दूसरों पर जुल्म करने वाला	भोग्य	–	भोगने योग्य
स्वच्छंदता	–	मनमानी	उत्सुकता	–	जानने की चाह
कुलेल	–	उछल–कूद करना	रक्त रंजित	–	खून से सना हुआ
लपलपाती	–	ललचाई हुई	क्षतविक्षत	–	अत्यधिक घायल
निरीह	–	बेचारा			

अभ्यास कार्य

पाठ से उच्चारण के लिए

किंकर्तव्यविमूढ़, रक्तरंजित, क्षतविक्षित, लपलपाती, स्वच्छंद, उत्सुकता।

सोचें और बताएँ

1. ''मैं कई रोज से अकेला महसूस कर रहा था आओ तनिक साथ–साथ पर्वतराज की सैर करें।'' भेड़िये के इस कथन के पीछे उसकी क्या चाल थी ?
2. भेड़िये को घायल करके बकरी के मरने पर मैना को गर्व क्यों हुआ ?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. ''अत्याचारी से यों कब तक प्राणों की रक्षा की जा सकेगी'' यह विचार मन में आया–
   (क) चरवाहे के (ख) भेड़िये के
   (ग) युवा बकरी के (घ) सभी बकरियों के ( )
2. ''तुम बहुत सुंदर हो, प्यारी मालूम होती हो'' यह कथन किसने किसको कहा–
   (क) तोता ने मैना को (ख) भेड़िये ने नई बकरी को
   (ग) चरवाहे ने नई बकरी को (घ) तोता ने नई बकरी को ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बकरियाँ चरने कहाँ जाती थीं ?
2. भेड़िये के पाँव उखड़ने का क्या कारण था ?
3. चरवाहा किससे डर गया था ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. चरवाहे ने पहाड़ पर बकरियाँ चराना बंद क्यों कर दिया ?
2. बकरियों ने बाड़े में कैद रहना ही उचित क्यों समझा ?
3. नई युवा बकरी दिनभर पर्वत पर क्या करती रही ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. नई बकरी बाड़े में बन्द रहना क्यों नहीं चाहती थी ?
2. नई बकरी ने भेड़िये से मुकाबला कैसे किया ?
3. मैना ने बकरी को शहीद क्यों कहा ?

भाषा की बात

1. साथियों ने उसे आँखों–आँखों में समझाने का प्रयत्न किया।

प्रस्तुत वाक्य में रेखांकित भाग का अर्थ है – इशारों में समझाना।

वाक्य के ऐसे भाग जो वाक्य में विशिष्ट अर्थ प्रकट करते हैं, मुहावरे कहलाते हैं।

आप भी पाठ में से ऐसे ही मुहावरे छाँटकर लिखें।

2. आओ, तनिक साथ–साथ पर्वतराज की सैर करें।

वाक्य में रेखांकित शब्द का अर्थ है, पर्वतों का राजा।यहाँ दो शब्दों से मिलकर एक नया शब्द बना है। इस प्रकार पदों के मेल को समास कहते हैं। इस प्रक्रिया से बनने वाले शब्दों को समस्त पद तथा जब उन्हें अलग–अलग किया जाता है तब उसे समास विग्रह कहते हैं, जैसे– राजा का कुमार=राजकुमार, राजा का महल = राजमहल।

जब दो पदों के मध्य किसी कारक विभक्ति का लोप होता है, वहाँ तत्पुरुष समास होता है। पिछले अध्याय में कारक विभक्तियों के बारे में चर्चा की गई थी। आप अपने शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से इस प्रकार के सामासिक पद बनाइए।

यह भी जानें

समास के छह भेद होते हैं–

1. अव्ययी भाव समास – प्रतिदिन, यथासंभव
2. तत्पुरुष समास – रसोईघर, राजमहल
3. कर्मधारय समास – नीलकमल, नीलांबर
4. द्वंद्व समास – माता–पिता, रात–दिन
5. द्विगु समास – नवरात्र, चौराहा
6. बहुव्रीहि समास – लंबोदर, नीलकंठ,

पाठ से आगे

1. सभी बकरियों ने मिलकर नई बकरी की तरह पहले ही मुकाबला किया होता, तो क्या होता ?

यह भी करें

आप भी पुस्तकालय से वीरता वाली कहानियाँ ढूँढ़कर पढ़िए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

मनुष्य मारना सीखे, उससे पहले उसमें मरने की शक्ति होनी चाहिए।